पंचम अध्याय

रामदेव धुरंधर के उपन्यास की समस्याएँ :-

साहित्य मानव जीवन की व्याख्या करता है। उपन्यास में मनुष्य जीवन की समस्याओं का सुन्दर ढंग से निरूपण किया गया है |

प्रवासी साहित्य : अन्तर्वस्तु से जुड़ी समस्याएँ -

आज के भूमंडलीकरण और उदारवादी दौर में प्रवासी हिन्दी साहित्य लेखन को हिन्दी साहित्य के दायरे में लाना हिन्दी साहित्य को जीवंतता और व्यापकता तो प्रदान करेगा ही, यह नई प्रकार की वर्जनाओं और परम्परागत मूल्यों को भी तोड़ेगा। जो भारतीय, गिरमिटिया मजदूर के रूप में या फिर प्रोफेशनल्स के रूप में विदेश गए वे भारत की सांस्कृतिक स्मृतियों को कैसे जिंदा रखे हुए हैं, साथ ही दो संस्कृतियों के बीच में वे कैसे सामंजस्य स्थापित करते हैं, इसकी जानकारी के लिए प्रवासी हिन्दी साहित्य एक महत्वपूर्ण जरिया है। दुनिया में हुए बदलाव ने प्रवासी साहित्य को महत्वपूर्ण बना दिया। वह साहित्य जिसमें एक देश या स्थान से बिछड़ने का दर्द तथा दो सभ्यताओं के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास हो, उसे प्रवासी साहित्य माना जाता है। चाहे इसके लेखक ने भारत से प्रवास किया हो या फिर उसकी पैदाइश वहीं की हो। इसके साथ ही विदेशी हिंदी लेखक (गोरे वर्ण के) जिनकी रचनाओं में प्रवासी तत्व मौजूद है , उन्हें भी इस साहित्य के अंतर्गत रखा जाना चाहिए। हिंदी साहित्य को अपना फलक विस्तृत करने की आवश्यकता है। आज प्रवासी को लेकर स्वीकार्यता बढ़ी है। गौर तलब है कि गरीबी और जहालत की स्थिति में अंग्रेज सस्ते भारतीय मजदूरों के मॉरीशस, त्रिनिडाड , गुयाना , सूरीनाम , कंबोडिया ,जावा इत्यादि देशों में ले गए | यह क्रम सन 1834 में आरम्भ हुआ और सन 1922 तक चलता रहा | ये भारतीय मजदूर अधिकांशतः उत्तर प्रदेश , बिहार ,पंजाब और दक्षिण भारत के तमिल थे | गिरमिटिया प्रथा खत्म होने के बाद ये गरीब मजदूर इन्हीं देशों के निवासी बन खेती या व्यवसाय में लग गये , जो प्रवासी भारतीय के नाम से जाने गये |

प्रवासी साहित्यकार रामदेवधुरंधर के उपन्यासों मैंने निम्न प्रकार की समस्यों विवेचन किया है ...

भारतीय मजदूरों के उत्पीड़न की समस्याएँ :-

भारतीय मजदूर हुकूमत के समय भारत से विभिन्न देशों में गए। इनकी पहली टोली मॉरीशस 1834 में पहुँची। इनमें अधिकतर मजदूर बिहार या उत्तर भारत के थे। ये मजदूर अपनी भाषा, रहन-सहन ,धर्म ,संस्कृति सबके साथ मॉरीशस पहुँचे थे। उन्हें गन्ने की खेती में मजदूर के रूप में जोड़ दिया गया। थोड़े ही समय में मॉरीशस खेती प्रधान देश बन गया। इन सारी यात्रा में इन भारतवंशियों को अनंत पीड़ा, संघर्षों का सामना करना पड़ा। 'पथरीला सोना' उपन्यास में इन मजदूरों के उत्पीड़न की बात बताई गई हैं। मॉरीशस में भारतीय मजदूरों के अंग्रेजों के प्रति व्यवहार एवं मजदूरों की प्रत्येक घटना पर प्रतिक्रियाओं को दिखाने का प्रयत्न इस उपन्यास में शामिल किया गया है। इसके द्वारा भारतीय समाज का नाम बन रहा था। इन समाज पर इन छोटी-छोटी घटनाओं का वर्णन दिखाई देता है। मौखिक इतिहास के आधार पर उपन्यासकार ने भोजपुरी गीतों और वृतांतों का आकलन किया है। इनके द्वारा भारतीय मजदूरों की पीड़ा एवं उनके दर्द का अनुभव इस उपन्यास में दिखाई देता है।उपन्यास में पात्रों द्वारा दुःख भरे गीत गाए जा रहे हैं जिनके आधार पर भारतीय मजदूरों का दुःख और उनकी उत्पीड़ित दशा को देखा जा सकता है।यह गीत जैसे भारत के बिहार में गाये जाते थे ,उसी रूप में मॉरीशस में आज भी यह गीत गाये जाते हैं।

'पथरीला सोना 'उपन्यास में आरम्भ में रामदेवधुरंधर ने मॉरीशस जाने से पहले जो समुद्री मार्ग का वर्णन किया है जो पाठक के ह्रदय को द्रवित करता है। जैसे -" इस यात्रा में बेटे थे, बेटियाँ थीं, पति पत्नी थे। पूरा परिवार एक घर से बिछुड़ा और दूसरे घर के लिए इन्हें समुद्र से कहना पड़ रहा है के लिए कभी तुम्हारी लहरों पर दस्तक देनी थी ! बड़ा विचित्र लग रहा है, हमें अपने जीवन के लिए कभी तुम्हारी लहर पर दस्तक देनी पड़ी थी !

जहाज़ के कर्मचारी इस तरह बातें करते थे, मानो आतंक और अपमान से ही जहाज़ आगे बढ़ाया जा सकता है। जहाज़ में कोई खराबी आए तो डाँट कर कहा जाता था इन सबके के कारण ऐसा हो रहा है। कुछेक अधिकारियों के हाथ में बंदूक थी। लाठी तो लगभग सब के हाथ में थी। मार खाने जैसा काम न करने पर भी मारा जाता था। गाली से छलनी हो रहें हों तो जुबान में ताला लगाए रखें ,क्योंकि यही करके अगली गाली से अपने को बचा पाएँगे। एक जवान औरत बीमार थी। जहाज़ के इस सफ़र में

उसका दम घुट रहा था | अधिकारियों ने मखौल इस रूप में खड़ी कर दी थी कि बच्चा होने के दर्द से वह पीड़ित है। औरत कहती थी मुझे बच्चा नहीं है। एक अधिकारीने कहा -पेट दिख तभी मैं मानूँगा|" 1 औरत का पति ये सब जानने के बाद भी कुछ नहीं बोलता था। रबीचन नामक एक युवक ने स्त्री की इस घटना का विरोध किया तो उसके पास इस सारे जहाज की गंदगी साफ़ करने का हुकम सुनाया गया। उसने यह किया भी। जहाज मॉरीशस पहुँचता है। जहाज़ किनारे लगता है | लोग सीढ़ियों से दबे पाँव उतर रहे थे। लोग कहीं से भी देखने पर कहेंगे लगा। लोग सीढ़ियों से दबे पाँव उतर रहे थे। पर उतरने वालों में रबीचन नहीं था ।-" कौन आवाज उठा कर पूछ पाता कहाँ है हमारा जहजिया भाई रबीचन? जहाज के अधिकारियों के खेमे में मानवता मृत थी और इन भारतीयों के खेमे में मानवता बेबस थी! "2

समुद्र के ज्वार - भाटे पीछे छूटे। अब लोगों के अपने अंतस में ज्वार भाटे उठने की बारी थी। जहाज में मनमानी और अमानवीयता के कांड तो बहुत रचे गए। अब सामने में जो दृश्य दिख रहे हैं यह भी संकट, अत्याचार, उत्पीड़न और जाने अनजाने आतंक के फफोलों से पटे प्रतीत हो रहे हैं। तब तो कपड़ों की यह जो गठरी सिर पर अपने वजूद का हिस्सा बने साथ में चली आ रही है, कहीं ऐसा तो नहीं इसी में अपने जीवन का पूरा कपड़ा हो और जीवन के अंत में कफ़न की कोई फटी सी चादर इसी से निकलने वाली हो।

कलकत्ते के बंदरगाह पर लोगों के नाम लिखे गए थे। पहचान पत्र की औपचारिकता के लिए आधे से भी कम लोगों के पास इस तरह के कागज़ थे। बंदरगाह आ गए और लोगों को कहीं जाते देख कर कतार में खड़े हो गए तो भीड़ के आप भी सदस्य हो गए। छल का जाला तो अपना काम कर ही रहा था। ऐसा भी हुआ था कि अरकाटियों ने बहुतों से यह कह कर पैसा ऐंठा था कि उस देश में जा रहे हो जहाँ पत्थर उलाटो तो सोना पाओगे। छली अरकाटी जिन्हें, ले जा रहे थे मोह पाश इन पर इस तरह से चलाया था कि न जाओगे तो वहाँ सोना कोई दूसरा चुग जाएगा और तुम हाथ मलने के लिए यहीं पड़े रह जाओगे। अरकाटियों को अधिकारियों से अपना हिस्सा मिल जाए। इस से आगे की यात्रा में लोग अपना जानें कि जीते हैं कि मरते हैं। मॉरीशस के बंदरगाह पर कानून के तहत लोगों को इस देश में बसाने के लिए औपचारिकता पूरी की जा रही थी। पर यदि वह कानून ही हुआ तो उस की आत्मा बहुत कच्ची थी, उस की कार्य पद्धति बहुत उथली थी और उसका दिमाग मानो किसी अनाम दैत्य के हाथों से

संचालित होता हो। हाथ पकड़ कर रोकने वाला कोई न होने से इन लोगों की प्रभुता सर्वोपरि थी। कहते हैं मंदिर जाएँ तो पहले उस के लिए मन बनाएँ। यह तो जैसे घास फूस का मामला था। मन तब तो गंदा ही होता।

कलकते में लिखे गए नामों की तुक बिठाने में अड़चनें हो रही थीं। किसी का नाम पूछने पर वह अपना नाम बोलता था तो कागज़ में वह नाम मिलता ही नहीं था। पर औपचारिकता का पूरा होना था और वह पूरी हो रही थीं। तब तो सही नाम लिखे जाने के साथ काल्पनिक नामों से भी खानापूर्ति की जा रही थी। काल्पनिक ही सही, अनामी रहने की अपेक्षा अच्छा था एक नाम मिल जाए। लोग अस्तित्व की पहचान के लिए दिये हुए नामों को याद रख सकें तो गनीमत है, अन्यथा दूसरों से पूछते फिरें कि कोई मेरा नाम तो बताए। माना कि नाम परिवर्तित हुआ.. लेकिन क्या अस्तित्व परिवर्तित हो सकता था? भारत से जो काया मिली थी वही काया तो यहाँ अपनी होती। बस अस्तित्व को जीने की परिभाषा परिवर्तित हो जाने वाली थी। अपने देश में रास्ते पहचाने होते थे। कहीं से भी लौटते थे तो रास्ता जैसे हाथ थाम कर घर की चौखट पर पहुँचा देता था। मारीच देश में तो अभी अपने घर की पहचान नहीं। आगे कौन जाने अपना घर हो कि नहीं। यदि इस देश में स्नेहिल रास्ते होते हों और भटके हुए आदमी को घर की चौखट तक पहुँचाने के लिए -"वे रास्ते स्नेह दिखाएँ भी तो उनसे कैसे कह पाएंगे वहाँ है। मेरा घर पहुँचा दो मुझे वहाँ! "3

कागज़ में लिपटा आधा पेट खाना मिला। पानी का जैसे चाहें उपयोग कर लें। पानी इस देश का सौभाग्य होने से इन लोगों का भी सौभाग्य हुआ। यह देश इतना पानी देता है कि अपने ऊपर उलिच लें, अपने काम के लिए पानी को अपनी हथेली पर सहेज लें, फिर भी देखेंगे बहुत सारा पानी किसी नदी में या तो किसी नाले में बलखाता सा समुद्री की ओर बहता चला जा रहा है। इतना पानी जिस देश में हो वह उन आप्रवासियों को प्यासा नहीं छोड़ता। इस देश के पानी की यह नेमत उन लोगों को कबूल हो जाती तो यह देश अपना फक्र मानता कि उस ने अपनी ओर से इतना तो किया। सिर पर चढ़ा देश का कर्ज़ इसीलिए मूल्यवान हो जाता है। बेबस प्राणी दैत्य वृत्ति के आदमी की गिरफ्त में मौत से जूझ रहा हो तो भी देश उसे जीवन की उसाँसों के लिए हवा प्रदान करता है। बेबस प्राणी मर भी जाए और लाश अनपूछी छूटी पड़ी हो तो भी देश उस के मांस से ले कर हड्डी तक को अपने में समाता है। मौत के बाद भी जो क्रंदन शेष हो उस का रेशा - रेशा देश की ऐसी महत् कृपा से अंतर्धान हो जाता है। देश

को ऐसा काम करते नं ऊब होती है, न घृणा से वह बौखलाता है। बल्कि जो अंतर्धान हो जाए देश उस के न रहे कण को रहा मान कर उसे अपनी ज़मीन में बोता है। देश ही जानता है ऐसे भी वह अपनी उर्वर शक्ति में मानो तार से तार जोड़ता है और हरियाली में श्री वृद्धि होती जाती है।

शक्कर प्रतिष्ठानों के फ्रांसीसी गोरे पहले से अपनी लिस्ट छोड़ चुके थे कि उन्हें कितने मजदूर चाहिए। पर मजदूरों के बँटवारे का एक बाजारूपन भी साथ साथ निभ रहा था। इस में अरकाटी थे और गोरों के वे सरदार थे जो इन्हें अपने साथ ले जाने के लिए आए हुए थे। इधर से या उधर से मज़दूरों की संख्या ठीक से बिठाने की प्रक्रिया में एक को यदि उस टोली में खड़ा किया जाता था तो दूसरी टोली के किसी एक से कहा जाता था उस कतार में जा कर खड़े होओ। आदमी बेचे और खरीदे जाने के उस दृश्य का इस देश को गवाह बनना था ! अरकाटियों और सरदारों के इस हाथ से उस हाथ होने में नोट नीचे गिरते भी थे। पहरेदार रुख ऐसा दिखा रहे थे कि जिसे जहाँ चाहें हाँक ले जा सकते हैं। लोग अपने अपने रिश्तेदारों को कसे एकदम से सावधान हो पड़े थे। पत्नी अपने पति से अलग नहीं होता, लेकिन भाई अपने भाई से शायद छूटता !

सुबह के वक्त जहाज़ यहाँ अपना लंगर डाल चुका था। औपचारिकताएँ पूरी होते होते - आधा दिन निकल गया था। रात के ख्याल से लोंगों को कल सुबह तक यहीं ठहराने के लिए किसी जगह की बात तो हो रही थी. लेकिन साथ में यह भी सुनने को मिल रहा था कि इसी वक्त लोगों को उन के ठौर ठिकाने पर पहुँचाना ठीक होगा। शक्कर प्रतिष्ठानों के वे सरदार तो यहाँ मौजूद ही थे जिन के हाथों में इन लोगों को सौंपा जाना था। कौन फ्रांसीसी मालिक कितने मज़दूर लेना चाहता है इस की लिखा पढ़ी पूरी करने के बाद वे चले गए थे। उन का काम 1 संभालने के लिए यहाँ या तो अफ्रीकी मूल के हब्शी या भारतीय खून के सरदार थे। यदि आगंतुकों को यहाँ ठहराया जाता तो इन लोगों को भी ठहरना पड़ता। यह इन के लिए कुछ ऐसा था मानो मच्छर काटते और इन्हें मज़े की नींद न आ पाती। तब तो ये अपनी साँठ गाँठ चलाने में लगे हुए थे कि अपने हिस्से के मज़दूर इन्हें सौंप दिया जाए और ये इन लोगों को चाहें तो हाँक ले जाएँ या अपनी भाषा और व्यवहार का कोई और फंदा उन के गले में डाल कर चलाने लगे। जाहिर था दूर के शक्कर प्रतिष्ठानों के लिए जिन लोगों को पहुँचाया जाने वाला था अभी से उन्हें चलाना शुरू करें तो पूरी रात बीत जाने के बाद अगले दिन सही मंज़िल के दरस हो पाते। मंत्रणा पारित हो जाने पर बहुत से लोगों को कल के लिए यहीं रोक

लिया गया और उसी अनुपात से सरदार बाकी लोगों को ले कर भावी जीवन की महा यात्रा के लिए चल पड़े !

इस प्रकार भारतीय मजदूरों की उत्पीड़न की समस्या को यहाँ पर चित्रित करने की कोशिश मैंने की हैं |

गिरमिटिया मजदूरों का जीवन उसकी समस्याएँ :-

गिरमिटिया शब्द की उत्पति कैसे हुई? गिरमिटिया लोग कौन है? मॉरीशस देश में गिरमिटिया मजदूरों का आगमन कैसे हुआ? इन सभी मुद्दों की जानकारी के लिए हमें इतिहास को समझना जरूरी है। दास प्रथा बहुत पुरानी प्रथा है इसके साक्ष्य हमें आदिकाल से ही मिलते हैं। शताब्दी से नये-नये औपनिवेशिक साम्राज्यों को स्थापित करने की होड़ शुरू हो गई है। परिणामस्वरूप यूरोप के कई उपनिवेश स्थापित हुए और उनकी जरूरत के लिए दक्षिण अफ्रीका से नीग्रो को जबरन इन उपनिवेशों में लाया गया। इनके साथ क्रूर एवं पाशविक व्यवहार किया गया। मानव पर होनेवाले अत्याचारों जिसके अनुसार सन 1807 ई.को दास व्यापार कानून को खत्म कर दिया गया। दास प्रथा से स्वतंत्र होने के पश्चात दासों ने काम करना बंद कर दिया ,जिसके तहत चीनी उद्योग तथा कृषि बंद होने की स्थिति पर आ गए।

वहाँ की शक्तियाँ भारत की आर्थिक स्थिति से भलीभाँति परिचित थी , इसी कारण भारतीय लोगों को भरम में डालकर एक नये प्रकार की दासता की शुरुआत की जिसे नाम दिया गया एग्रीमेंट प्रथा। भारत के भोले-भाले मजदूरों को जो अधिकत्तर अशिक्षित वर्ग थे, इन्हें इसी प्रथा के बहाने फँसाया गया। अर्कटिया इन्हें झूठे , लुभानेवाले वादे देकर मॉरीशस जाने के सपने दिखाते थे कि मॉरीशस एक ऐसा देश है जहाँ उनको पत्थर पलटने से सोना प्राप्त होगा। इसी कारण अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के इरादों को लेकर भारतीय मजदूर शरतबन्द प्रथा के अनुसार पाँच वर्ष के एग्रीमेंट में मॉरीशस भेजे गए। इस शरतबन्द प्रथा के अधिकत्तर लोग बिहार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश से थे जो कम पढ़े-लिखे थे। जिनकी मातृभाषा भोजपुरी होने के कारण वह अंग्रेजी में एग्रीमेंट शब्द का उच्चारण नहीं कर पाते थे। 'एग्रीमेंट' से 'गिरमिट' बना और 'गिरमिट' से 'गिरमिटिया' शब्द बना। चूँकि भारतीय मजदूर एक एग्रीमेंट के अंतर्गत लाये जाते थे इसलिए भोजपुरी बोली में उन्हें गिरमिटिया कहा जाने लगा।

रामदेव धुरंधर का सात खंडों में प्रकाशित श्रेष्ठ उपन्यास 'पथरीला सोना 'आप्रवासी भारतीय गिरमिटिया मजदूरों के संघर्ष और पीड़ाओं का अनूठा दस्तावेज है | जिन्होंने अपने आत्मबल ,शक्ति के आधार पर मॉरीशस की पथरीली भूमि को सोना बनाया और इस देश के भाग्य निर्माता माने गए।

मॉरीशस की संस्कृति, भाषा, रहन-सहन एवं संघर्षों को वहाँ के हिंदी साहित्य में शामिल किया गया है। इसी श्रृंखला में मॉरीशस से प्रसिद्ध साहित्यकार श्री रामदेवधुरंधर के उल्लेखनीय उपन्यास 'पथरीला सोना 'को देखा जा सकता है | प्रस्तुत उपन्यास में प्रवासी पीड़ा को बहुत गहराई के साथ चित्रित किया गया है। उपन्यास में गिरमिटिया लोगों के सामने भारतीय अस्मिता के प्रश्न को लेकर संघर्ष ,गंतव्य स्थानों की विभिन्नता और वहाँ की संस्कृति इत्यादि को इस उपन्यास के द्वारा जाना जा सकता है |

सामाजिक समस्याएँ :-

सामाजिक संरचना (जाति और वर्ग) के विषय में यह सारांश निकलता है कि जो जाति और वर्ग की जड़ीभूत प्रथा भारत में विद्यमान थी | वह उपन्यास के संदर्भ में मॉरीशस में देखने को नहीं मिलती | वहाँ सभी एक दूसरे के 'जहाजिया भाई ' के रूप में ही जाने-पहचाने जाते हैं। जो लोग भारत से वहाँ गये उनकी समस्याएँ ,कार्यक्षेत्र , उनके दुःख-सुख सब एक जैसे थे। इसीलिए वे सभी एक थे। मॉरीशस में फ्रेंच समाज था। मॉरीशस अंग्रेजों का उपनिवेश था। मॉरीशस पर अंग्रेजों का वर्चस्व स्थापित हो जाने के बाद वहाँ क्रिश्चियन धर्म को बढ़ावा मिला। मॉरीशस में भारतीय जाने के बाद वहाँ उन्होंने अपनी मेहनत के बल पर अपना वर्चस्व स्थापित किया। मॉरीशस में तमिल भारतीय और अफ्रीकी मूल के दासों से एक अलग नस्ल बनी थी। इन भारतीयों के जो वंशज थे, उन्हें इन्डों-मॉरीशस कहा गया। इसी कारण मॉरीशस का समाज जाति में विभाजित होने का प्रश्न ही नहीं था। रामदेवधुरंधर अपने साक्षात्कार में मॉरीशस में वर्गों का वर्णन करते हुए कहते हैं कि -" दुनिया में परिवर्तन का जो वातावरण बन गया है। मॉरीशस उससे अछूता नहीं है। पर जो परिवर्तन आ रहा है इसे यूरोप से जोड़कर देखा नहीं जा सकता। जो हो रहा है वह यहाँ की सुविधा के अनुरूप हो रहा है | परंतु इसे भी सच मानेंगे कि परिवर्तन के यहाँ के मध्यवर्ग को आक्रांत कर रखा है। ऊँचे वेतन और पैसे में जो आगे हैं उनसे मध्यवर्ग होड़ लेता-सा प्रतीत हो रहा है और यह मन और सोच को बहुत

प्रभावित कर रहा है।" 4

उपर्युक्त कथन से हम कह सकते हैं कि मॉरीशस में उच्च और मध्यवर्ग का प्रचलन था , लेकिन इसके साथ-साथ मध्यवर्ग उच्च वर्ग में रूपांतरित होने के लिए प्रयत्नशील है। अतः इसे एक प्रगतिशील समाज के रूप में भी देखा जा सकता है। समाज का आर्थिक और सामाजिक विकास भी कहीं-न-कहीं जुड़ा हुआ है | भारत में विविध धर्म के लोग जैसे -हिंदू ,मुस्लिम ,बौद्ध ,जैन ,सिक्ख इत्यादि दिखाई देते है। इन विभिन्न धर्मो के लोग जैसे-हिंदू मंदिरों में , मुस्लिम मस्जिदों में , सिख्ख गुरुद्वारे में तो ईसाई सर्च में पूजा -पाठ , नमाज और प्रार्थना को महत्व देते हैं। उसी तरह मॉरीशस में भी भारतीय जीवन में पूजा-पाठ , नमाज और प्रार्थना को महत्व दिया जाता है। इन बातों का विस्तार हो रहा है और भारतीय भाषा पढ़ाई के लिए उपाय करने में कोई कमी नहीं छोड़ी जा रही है।

समाज में गिरमिटिया मजदूरों की स्थिति का वर्णन लेखक ने इस तरह किया है -"कारखाने से निकाले जाने वाले को रोना आ जाता। खेतों में काम करने से बरौं का झंझट था। इमाम अली , भारोंसिंह ,हरखू , चंदूलाल , अजोधा सब के सब मजदूरों की सवारी करते कहते रहते कि तीन दिन खाली हो तो मेरे खेत में दो पैसों में काम कर जाओ | लंगड़ा घोड़ा किरपाल भी ऐसे दहाड़ता मानो गोरों का बाप अपने महल में खा पीकर घोड़े की सवारी पर निकला हो और घोड़ा दौड़ाने के लिए मजदूरों की पीठ को उपयुक्त मैदान समझकर रौंदता चला जा रहा हो। वास्तव में मजदूर खेत से जुड़े या कारखाने में रहे उन्हें मेहनत करके ही तो जीना था। इस वक्त तकदीर का यह जो फैसला हो रहा था इसका एक ओर पक्ष था। कारखाने के इन मजदूरों की चिंता इस में भी थी कि यहाँ से छूटकर खेत जाएँ तो बेइज्जती महसूस होगी। तीन दिन की नौकरी ही सही। यहीं रह जाते पर भाग्य लिखने वाले तो लिखकर रहते।" 5

आगन्तुकों के बच्चों के चीख-चीत्कार से यहाँ के लोग समझ तो रहे थे कि इन्हें भोजन की बहुत जरूरत है। किन्तु किसके घर में शेष खाना हो कि इन बच्चों के पेट भर सकें। खाना पकाना पड़ता और पकाने में समय लगता। फिर भी जैसे-तैसे बच्चों के कंठ में थोड़ा अन्न पहुँचाया तो जाता ही आश्चर्य नहीं होता जहाज में निराहार रह लेने से बड़े लोग निराहार रहने की अपनी उस आदत का यहाँ भी निर्वाह कर लेते |

नई झोपड़ियां बनाये जाने से यहाँ के लोगों को पता था कि लोग आनेवाले हैं | पर यह पता नहीं था कि वे इतनी रात को आएँगे और वे बिहारी होंगे। दिन का वक्त होता तो शायद इतनी परेशानी नहीं होती। सन्नाटे में सहसा सुनाई पड़ा -"कलकत्ता से खुले जहाज पुरवाई धीरे से चलो।" 6 इस गिरमिटिया मजदूरों की दशा समाज में अधिक खराब थी |

स्त्रियों की समस्याएँ :-

बेमेल विवाह का सजीव चित्रण- हमारे समाज में आज तक भी कुछ गरीब परिवारों में बेमेल विवाह होते हैं। ज्यादातर गरीब परिवार में लोग अपनी कन्याओं का विवाह बुजुर्ग, दुहाजू या विक्षिप्त पुरुषों के साथ करने के लिए मजबूर हो जाते थे या मजबूर कर दिए जाते थे। तत्कालीन समाज में ऐसे बहुत से उदाहरण देखने को मिलते हैं। जब स्त्री-जाति बहुत से संघर्षों से जूझ रही थी । ननक की पत्नी भी इसी प्रकार की घटना की शिकार है। वह दुल्हन के वेश में ही जहाज में पहुँचती है। उसने रोकर अपने लोगों को बताया था कि वह घर से भागी है। उसकी शादी उसके गाँव से बहुत दूर रहने वाले एक बूढ़े से होने वाली थी। दुल्हन ने सुना था बूढ़े की उम्र सत्तर साल की थी। उसको बड़ी-बड़ी बेटे-बेटियाँ थे। सबकी शादी हो गई थी। धन के लिए वहाँ बहुत झगड़े होते थे। उसके बेटे-बेटियाँ चाहते नहीं कि वह शादी करें। शादी की सनक में उसने अपने बच्चों का से भी था। अब तो वह किसी भी तरह शादी करके ही मानने वाला था क्योंकि उसने अपने पैसे के दम पर लड़की वालों को मानो खरीद ही लिया था और उन्हें कर्ज देकर मानो उन्हें उनके परिवार के साथ हमेशा के बंधक ही बना लिया हो। इस प्रकार तत्कालीन समाज का बहुत ही सटीक दृश्य प्रस्तुत किया गया है।

तत्कालीन समाज में स्त्रियों की दशा- तत्कालीन समाज में स्त्रियों की दशा बहुत ही सोचनीय थी। स्त्रियों को अपने अधिकारों की प्रति सजगता नहीं थी। स्त्री केवल वस्तु की तरह थी जिसे अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए ही उपयोग किया जाता था। उसकी अपनी इच्छा अनिच्छा स्वतंत्रता, इत्यादि मनोभावों का कोई भी महत्व नहीं था। वह केवल आदेशों का पालन ही करती आ रही थी। वह केवल कर्तव्यों का निर्वहन करती थी जिसमें अधिकारों के लिए कोई स्थान नहीं होता था। जैसे जब बूढ़े से शादी करने की बात आती है तो लड़की यहाँ रो-रोकर अपने माँ-बाप से कहती थी कि उसे बूढ़े के घर न भेजें। पर माँ-बाप मानते नहीं थे। वास्तव में माँ-बाप की एक बहुत बड़ी विवशता

थी। उतनी दूर रहने वाले बूढ़े से किसी ने लड़की के माँ-बाप का संपर्क करवाया था। पैसे के अभाव में पड़े हुए लड़की के माँ-बाप एक महीने के बीच ही उस बूढे के कर्ज के नीचे दब गए। आज पैसा आया तो लड़की के माँ-बाप ने लिया और कल बूढ़े के आदमी पैसा माँगने के लिए सामने आ खड़े हुए। वे जान लेने की धमकी भी दे रहे थे। यह सब उनकी बेटी को पाने की साजिश थी। माँ-बाप अब भ्रमित हुए। लड़की को अपने माँ-बाप के लिए अपना बलिदान अब तो करना ही पड़ता । पर लड़की के ग्रहण का निदान कहाँ था? शादी न हुई तो माँ-बाप अपने को शर्मिंदा पाते। शादी हो जाती तो बरातियों के हाथों कोठे में पहुँचती। यह कैसी तकदीर लेकर वह पैदा हुई थी? ऐसी तकदीर न देखी गई और न सुनी गई। यही बात हो रही थी। यही परिस्थिति लगभग हर घर की ही थी।

'पथरीला सोना ' उपन्यास में लेखक ने इसका वर्णन इस तरह किया है -" लोगों को यहाँ आकर राशन के लिए लिखवाना होगा। मर्द और औरत जितने हैं सबको काम करना पड़ेगा। बल्कि यह नियम कड़ा ही होगा। दूसरे कोण से तुम लोगों के भले के लिए ही यह नियम है | घर में औरत और बच्चे हैं तो जाहिर है एक कमाने से वह पर्याप्त नहीं होगा। जानबूझकर कोई मजदूरी पर न जाकर घर रहे तो उससे पूछताछ की जाएगी।"7 इस तरह आगे भी स्त्रियों की परेशानी की बात की गई हैं। -"काम की बात तो हो गई अब मन बदलाव की बात होती। गोरे एक ही तरह से बोल रहे थे और सरदारों की ओर से उसका रूपांतरण चल रहा था। किसकी बेटी खूब सुन्दर है वह हाथ उठाए | किसकी औरत खूबसूरत है वह भी हाथ उठाए | किस बूढ़े ने जवान लड़की से शादि की है ? ऐसे परिवार पर कृपा दृष्टि अधिक रखी जाएगी। सुन्दर बेटियों और औरतों को काम में बहुत सुविधा होगी | उन्हें गोरों के घरों में काम करने के लिए बुलाया जा सकता हैं तो उन्हें फूलों की क्यारी में पानी सींचने के लिए भेजा जा सकता है।" 8 ये गोरे लोग भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की स्त्रियों के साथ मिलकर खराब कार्य करते थे।

गोरा विक्टोर ने कोकिल की बेटी रुक्मी को बीच रास्ते में परेशान किया था। उसी वक्त रुक्मी डर के मारे भागने का रास्ता ढूँढ रही थी ,किन्तु जल्लाद ने उसके सामने घोड़ा रोक दिया था। रामदास नौकरी से लौट रहे थे कि राक्षस को कुकृत्य करते देखा था। उन्होंने घोड़े की लगाम पकड़ ली थी। विक्टोर ने उनपर चाबुक से वार कर दिया था।| मार से वे लोछिया गए थे फिर भी उन्होंने डटकर विक्टोर का सामना किया था।

कँवल और धानी की शादी हो जाती है। ससुराल में भी धानी को बहुत दु:ख सहन करना पड़ता है। एक दिन उनके परिवार में सुबह रामदास और सती बहू को घर में छोड़कर नौकरी पर चले गये | धानी रहने को तो रह ली , किन्तु उसका दिल जैसे काँटों में उलझा हुआ था | कँवल को तो अब तक देखा नहीं। मानेस के कायदे अनुसार -" कँवल को हर हालत में मज़दूरी पर जाना था। यदि वह नौकरी पर न जाए तो उससे पूछताछ की जाएगी |धानी ने अपने पिता से सुना था अपने से रेमी ढांका में निर्दयता का जो राज चलता है मुसे मानेस ढाँका का हाल भी यही है |"9 'ढलते सूरज की रोशनी 'उपन्यास में लेखक ने इस प्रकार किया है -"कविका ने कहा था ,वह अपने एक दोस्त के लिए मुझसे मोबाइल से बातें कर रहा है। उसने मुझे बताया था वह मॉरीशस का शिक्षा मंत्री था नाम था प्रबोध सागर। दो-तीन दिन बाद मॉरीशस से उसकी रखैल आनेवाली थी | उसका नाम था आनी चंदन। जो आदमी मुझसे बातें कर रहा था, वह चाहता था मैं शिक्षा मंत्री प्रबोध से ब्लैकमेल करूँ। " 10 स्त्री के शोषण का चित्रण यहाँ दिखाई देता है |

'बनते बिगड़ते रिश्ते ' उपन्यास में सुधा और उसकी माँ लीलावती तथा भाभी कमलेशा के साथ घर में कुल तीन स्त्रियाँ हैं। किन्तु मॉरीशस के वाकवा शहर के सुखी ,समृद्ध परिवार में रहने के बावजूद भी तीनों स्त्रियों को कोई भी आदर-सम्मान प्राप्त नहीं है।उनकी न अपनी कोई अस्मिता है और न अपना कोई अस्तित्व। रामदेवधुरंधर जी ने प्रस्तुत उपन्यास के द्वारा यह बताया है कि समाज में स्त्री को अपने अस्तित्व और अस्मिता को बचाए रखने के लिए कितना संघर्ष करना पड़ता है।एक पुरुष किस प्रकार से भाई , पिता और पति बनकर स्त्री को प्रताड़ित करता है। चेतन ने अपनी जिंदगी बरबाद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई | चेतन सुधा के अस्तित्व को मिटा देने की ताक में दिन-रात ध्यान रखता है और उसे यह अवसर भी मिल जाता है , जब उसको पता चलता है कि सुधा अपने ही सहपाठी देवजीत से प्रेम करती है तो उसको यह डर सताने लगता है कि सुधा का शिक्षित प्रेमी कहीं अपना हिस्सा न माँगने लग जाए। इस डर से चेतन अपने पिता को सुधा के विरुद्ध भड़काता है। पिता जयकिसुन अपनी झूठी इज्जत बचाए रखने के लिए सुधा को उसके प्रेमी अलग करने का निश्चय कर लेता है और सुधा का कहीं बाहर जाना बंद कर देता है। जयकिसुन और चेतन यह निर्णय लेते हैं कि सुधा की शादी जल्दी ही करनी होगी। तभी घर की शान को बचाया जा सके |

सुधा का विवाह को फ्लेर गाँव में एक साधारण से गरीब परिवार में पूरन नामक अशिक्षित युवक के साथ कर दिया जाता है। सुधा ससुराल में पैर रखते ही वहाँ की आर्थिक स्थिति को जान लेती है। कोसी जिसका आधा शरीर लकवा से ग्रस्त होता है जिसका कोई अस्तित्व नहीं है। वहीं तेतरी घर के सभी सदस्यों पर अपना अधिकार बनाये रखना चाहती है। तेतरी का विवाह जनक नामक व्यक्ति से हुआ था। विवाह के कुछ समय पश्चात ही उसके पति की मृत्यु हो गयी। वह विधवा बनकर जीने लगी परंतु वह यान तृष्णा का शिकार थी। तेतरी का विवाह कोसी के भाई जनक से हुआ था। इसलिए कोसी ने तेतरी के मायके से आए लोगों को लौटा दिया था और तेतरी को एक गाय खरीद कर उसकी देखभाल करने के लिए दे दिया था। तेतरी को उसी गाँव के जीवना से प्रेम हो गया और जीवना ने सबके सामने तेतरी को स्वीकार कर लिया था। तेतरी ने दो बेटे संतु और बाबू को जन्म दिया। समय के साथ-साथ तेतरी, जीवना को नीचा दिखने लगी। पूरे घर में तेतरी की ही हुकूमत चलती है। वह अपने तेज-तर्रार तेवर से घर के लोगों को भयभीत करके रखती है। सुधा पर भी तेतरी अपना अधिकार बनाये रखना चाहती है तथा उसे पता है कि सुधा एक संपन्न परिवार की लड़की है इसलिए उसे अपनी मीठी-मीठी बातों में फसा कर सुधा से उसके पिता के घर से पैसे, नल, घर बनवाने की माँग करती है। जिससे वह अपनी सास कोसी से दूर ही रहे। तेतरी हमेशा एक ही बात को सुधा के साथ वह शुरू-शुरू में सीधा आक्रोश नहीं दिखाती बल्कि उसकी चाटुकारिता लेकर चिंतित रहती है कि कहीं कोसी सुधा को अपने वश में न कर ले। सुधा हर रोज होनेवाले पारिवारिक झगड़े से परेशान हो चुकी थी। एक दिन ऐसा आया पूरन नशे की हालत में घर लौटता है और सुधा के साथ जोर-जबरदस्ती करने के प्रयत्न से सुधा को पीटता भी है। पूरन और सुधा के दाम्पत्य जीवन में झगड़ों के कारण सुधा प्रतिशोध लेने की भावना में गलत मार्ग अपनाना योग्य मानती है और इसी तहत उसके दरवाजे से होकर गुजरनेवाली बस एक यात्री को वह अपना जीवन देने के लिए तैयार हो जाती है , किन्तु उसे यह पता चलता है कि वह जो करने जा रही है वह सही नहीं है तथा उसे डर लगता कि सारे परिवार वालों ने उसके इस पाप को जान तो नहीं लिया |

वृद्धों की समस्या :-

वृद्धों की समस्या का स्वरूप -

वृद्धों के प्रति पूर्वग्रह तथा पक्षपातपूर्ण व्यवहार में वृद्धि को स्पष्ट रूप से देखा गया है। यहाँ तक कि वृद्ध (बूढ़े लोग शब्द ने अपमानसूचक अर्थ ले लिया है तथा जब वृद्ध लोगों से विनम्रता से पेश आते हैं तो अंग्रेजी भाषा में वृद्ध (aged), वयोवृद्ध (aging), बुजुर्ग (elderly), वरिष्ठ नागरिक (senior citçens) जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है। हमें शुरू में ही वृद्धा की समस्याओं की जटिलता का सामना करना पड़ता है जब यह प्रश्न उठता है कि वृद्ध कौन है? व्यवहार में उन लोगों को वृद्ध कहा जाता है जो जीवन की एक विशेष आयु को पूरा कर चुके होते हैं। विकसित देशों में जहाँ पर जीवन संभाव्यता अपेक्षाकृत अधिक है वहाँ लोग 65 वर्ष की आयु पार करने के बाद ही वृद्धों की श्रेणी में आते हैं किंतु विकासशील देशों में जैसे कि भारत में जहाँ पर अपेक्षाकृत कम जीवन संभाव्यता है इस अवधि को 60 वर्ष माना गया है। इन दोनों ही मामलों में वृद्ध होने की परिभाषा अस्पष्ट है। यह तो उसी प्रकार से है जैसे कि आप किसी दिन प्रातः सोकर उठे और अपने आपको एक बूढ़े व्यक्ति के रूप में पाएँ। वृद्ध होना अकस्मात् नहीं होता यह तो बहुत जटिल और क्रमिक प्रक्रिया है।

समस्या के आयाम -

वृद्ध होना एक जटिल और क्रमिक प्रक्रिया है जिसमें जैविक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक आयाम होते हैं जो एक-दूसरे से न ही मिलते हैं। और न ही ये किसी व्यक्ति की कालक्रमिक आयु (chronological age) के अनुरूप होते हैं। तथापि, यह सत्य है कि कालक्रमिक आयु बढ़ती हुई आयु और विकासात्मक प्रक्रिया का एक सूचक है जो जैविक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक आयामों में पूरा होता है। इसलिए अध्ययन के उद्देश्य के लिए कालक्रमिक परिभाषा वृद्ध अवस्था में क्या-क्या होता है, यह जानना लाभप्रद होगा। किंतु महत्वपूर्ण बात यह है कि किसी निर्धारित आयु-वर्ग, उदाहरण के लिए 60-64 वर्ष पर यह समरूप श्रेणी (homogeneous category) बनती है क्योंकि जैविक, मनोवैज्ञानिक तथा सामाजिक विकास की गति सभी व्यक्तियों में समान नहीं होती।

जयपति बहुत नशा करता है वह परिवार में गाली गलौज करता है | पत्नी से लड़ता है|

जयपति का नशा जब कमजोर पड़ा तब जाकर उसने समझा कि मुँह से तो अंधेर नगरी के विरुद्ध बहुत सारी अप्रिय बातें निकल गई हैं | उसने अपनी पत्नी से क्षमा माँगने जैसे भाव से कहा -"मैं तो मुँह बंद रखने में अपनी जिनगानी बिता दूँ | फिर भी न जाने कैसे इतना कह दिया|"' 11 पत्नी उसके बोलने से पहले खूब रो चुकी थी | अब बहुत संभव था कि क्रोध में पड़कर पति को मुक्के मारने लगी | पर पति ने रो-कलप कर जब ऊँचे स्वर से बोलने की अपनी भूल मान ली तो वह शांत रह जाने के लिए मजबूर हो गई। वह इतना ही कह सकी-" मेरे मरद , अपने बच्चों और अपनी जिनगानी तो देख ठीक यही होगा कि मुँह से कोई हरूफ न निकाल | यह जिनगानी ऐसे ही डरपोक बने एक रोज़ माटी में मिल जाए! "12 यहाँ वृद्धावस्था की समस्या का अंकन किया गया है।

बच्चों की समस्याएँ :-

मॉरीशस लेखक रामदेव धुरंधर का ऐतिहासिक उपन्यास 'पथरीला सोना' सात खंडों के साथ पूरा होता है। वैसे तो सभी छः खंड पाठको के बीच आ चुके हैं, लेकिन खबर ऐसी भी कि पचहत्तर के पार के श्री रामदेव धुरंधर की कलम ने सातवे खंड को पूरा कर अपना हीरक जयंती वर्ष पूर्ण कर लिया है। भारत से मॉरीशस पहुँचे भारतीय मजदूरों की पीड़ा- व्यथा कथा के साथ कदम मिलाते इस कालजयी उपन्यास में भारतीय मजदूरों और उनके बच्चों के जीवन का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत उपन्यास के प्रत्येक एक खंड के हर एक सोपान पर भिन्न-भिन्न रूप से दिखता है। सैकड़ों पात्रों से सजे इस उपान्यास को पूरा पढ़ने के लिए धैर्य चाहिए, उत्कंठा चाहिए और भाव चाहिए। पूरे उपन्यास में श्रम, स्वेद, संवेदना, सच्चाई, के साथ-साथ, दम्भ, दगाबाजी, दानवता के भी दर्शन होते हैं। भारत से मॉरीशस गए मजदूरों पर पूरा उपन्यास लिखते वक्त लेखन ने जीवन के हर पहलू को छूने की पूरी कोशिश की है। पूरा उपन्यास छः खंडों तक की यात्रा क्यों किया। इसका कारण करीब दो सौ वर्षों की दास्तान को सहेजना हुआ, जिसे इतना बड़ा लेखक कुछ पृष्ठ में तो नहीं समेट सकता था। उसे तो भारतीय मजदूरों दो सौ वर्षों के इतिहास को समेटना था। कई पीढ़ियों की दास्तान लिखनी थी। भारतीय मजदूरों से लेकर उनके बच्चों के जीवन के हर पहलू का चित्रण करना था। वैसे भी किसी बड़े उपन्यास या यूँ कहिये बड़े ग्रन्थ को लिखने के लिए हर युग में किसी न किसी वेदव्यास को जन्मना होता है।

इसी कारण इतने बड़े उपन्यास को हर कोई लिख भी नहीं सकता था। इसे लिखने के

लिए किसी साहित्य के धुरंधर को आना ही था, सो साहित्य छितिज पर रामदेव धुरंधर को आना हुआ होगा ।

'पथरीला सोना' भारतीय मजदूरों और उनके बच्चों के जीवन का सही चित्रण करने के लिए लिखने की आवश्यकता पड़ी और उसकी साइज एक आलेख नहीं बल्कि एक पुस्तक होगी। पथरीला सोना के कुछ पात्रों और घटनाओं को लेकर कर आलेख को पूरा करने का मेरा यह लघु प्रयास है, ताकि 'पथरीला सोना ' में छाये मजदूरों और उनकी संततियों का चित्रण चित्रित हो सके -

'पथरीला सोना' के कुछ अंशों के साथ इसे समझते हैं...

जहाज के पक्षी (1)

(श्री रामदेव धुरंधर जी के उपन्यास पथरीला सोना के प्रथम खंड के पंद्रहवे पृष्ठ से)

जहाजिया भाईयों को लेकर मारीच देश जाने के लिए जहाज कलकत्ता के बंदरगाह से आगे निकला तो इसी के साथ ही धुरंधर जी के पथरीला सोना की भी यात्रा शुरू हो गई। ऐसे में लेखक ने भी इन सोनों में से कुछ सोना बटोरने की कोशिश कर दी। पथरीला सोना के प्रथम खंड के पंद्रहवे पेज के एक भाग में लेखन ने लिखा कि -"आस-पास के दीपों से पंख फैलाये जहाज के मस्तूल पर आकर बैठ गए। ना जाने ये पक्षी क्या और क्या देखने के लिए इस जहाज पर आये होंगे, लेकिन के इस भाग में लेखक की नजरें जहाज पर उड़कर आये इन पंक्षियों और जहाज में सफर कर रहे भारतीय मजदूरों दोनों की की मनोस्थिति को बड़े ही ध्यान से देखने की कोशिश कर रही थी।"
13 जहाजिया भाई लोगों की आपस की यह चर्चा कि... देखो अब यह पंक्षी जो उड़ कर इस जहाज के मस्तूल पर आकर बैठ गये, यह इस बात का संकेत है, कि जिस देश को हम जा रहे हैं, वह देश अब आने वाला है। लेकिन यह सब बस उनके मन को ढाढस बढ़ाने वाला ही था क्योंकि समुन्दर के आसपास के दीप से आये ये पंक्षी अपने देश को छोड़ने वाले तो बिल्कुल ही नहीं थे। शायद वे सिर्फ अपनी जमीन छोड़कर नई जमीन पर पाँव की नई थाप जमाने जा रहे लोगों के मन के गम और खुशी थाहने आते थे। कुछ ऐसे भी पंक्षी थे, जो यात्रा की शुरुआत में ही आकर जहाज के मस्तूल पर बैठ गए। यह उनकी भूल हुई, या बदकिस्मती हुई, पता नहीं क्या पर वे भी इन्हीं भाइयों के साथ यात्रा पर निकल पड़े थे तो निकल पड़े। लेकिन ये बीच में उड़कर कहीं इसलिए नहीं जा

भी नहीं सकते क्योंकि वे जिस दीप में उड़कर जायेंगे, वह तो उनका देश हुआ नहीं और उनको पहचान वाला कोई होगा भी नहीं। कम से कम वे अपने इन लोगों की पहचान तो थे, उनके साथ यात्रा कर रहे थे। लेकिन लेखक को इतना पता जरूर था कि जहाज के साथ मॉरीशस पर इन पक्षियों के पास अपने पंख है और उनके अपने गोद भी है। मॉरीशस के पेड़ों पर अपनी मर्जी उड़कर बैठ जायेंगे, घोसला बना लेंगे और चारा भी चुग लेंगे। यदि मन नहीं लगा तो लौटते जहाज के मस्तूल पर बैठकर फिर कलकत्ता भी लौट आएँगे। किन्तु जहाज से मॉरीशस पहुँचे इन लोगों के पास न तो लडने के लिए में पंख थे न बैठने के लिए पेड़ मिलेंगे। इन्हें तो बस एक नई जमीन मिलेगी जिसपर पर उतरना ही होगा। अब यह जमीन इन्हें जीवन देती है, या मृत्यु।

लेखक की लेखनी आगे के भाग या खंडों से जरूर कुछ लिखेगी... जिसे आगे देखते हैं।

दर्द भरी राह को पकड़ कर ये मजदूर समुन्दर के रास्ते मॉरीशस की धरती पर पहुँच गए, जहाँ से, इनके सपने टूटते गए और दर्द भरी कहानियाँ जुड़ती गयीं। वैसे दर्द का प्रथम प्रहार भी अपनो के ही तरफ से होना था। पथरीला सोना मे धुरंधर जी लिखते है ...."रामदरश की टोली की चिंता मुंशी के दश वर्ष के बीमार बेटे की थी, जिसे उपचार की आवश्यकता थी। भाषा की दिक्कत का समाधान तो सरदार ही थे, जो उनकी भाषा को समझ सकते थे। पर जब इस बालक के बारे में कहा तो ये डॉट पर उतर आये। इनका बस एक ही कहना हुआ कि बच्चा बीमार था तो भारत से लेकर उसे निकले ही क्यों।" 14

सरदार खुद चलते व लोगों को चलाते, क्रोध से विधते, गाली-गलौज और सांकेतिक भाषा से महिलाओं कहर ढाते हुए लकड़ी के चरमराते पुल को पार किया और वृंदा नाम के तराई में पहुँचे।

यातना देने का पहला उपक्रम इन समूह सरदारों के यहाँ से हुआ। इस उपन्यास में भारतीय मजदूरों के बच्चों के दर्द का यथार्थ चित्रण किया गया है |

"पोर्ट लुइस से यहाँ तक साथ लगे हुए सरदार रूप सिंह ने अंधेरे में अपनी लाठी इधर -उधर घुमाई , जो एक आदमी को लगने से चीखने लगा |" 15

'पथरीला सोना' के इस सोपान पर सरदार मजदूरों के बच्चों की कथा लिख कर

वापस चले जाते हैं। दर्द की अनेकों कहानियों से भरा 'पथरीला सोना' ना भारत से गए मजदूरों के बच्चों का यथार्थ चित्रण करता हुआ प्रतीत होता है , जहाँ मजबूरी ,बेबसी , या लालच जिस भी हालात में कहें भारतीय मजदूर की आत्मा बिकती या बदलती नजर आती इसका एक चित्रण आलेख के निम्न अंश में दृष्टिमत होता है।

सुगनी कहानी एक मासूम बच्ची की जो हवस की सामग्री बन जाती है , सुगनी तो अभी बच्ची थी, उसके माँ-बाप की लालच दूर देश पहुँचने की मजबूरी, या भारतीय दगाबाजों की साजिस जो भी हो पथरीला सोना में समाई करुण कथा का यह अंश भी यथार्थ को दर्शाता है।

"रूपमती काफी हिल गयी, उसकी एकलौती बेटी का नाम सुगनी था। "हँसती थी तो गुड़िया सी लगती थी. साक्षात परी थी। " सीरिल (गोरा) को बेचवाई थुलथुल रूपमती नहीं चाहिए, उसे तो नादान परी चाहिए"

"खुद के शरीर से पाप न जानने वाली सुगनी, माँ-बाप के पाप से पाप की पहचान रखती थी "सुगनी व्यभिचार के लिए तैयार नहीं होना चाहती थी. लेकिन कौमार्य भंग....

ऐसे यथार्थ भरे चित्रणों से भरे पथरीला सोना को पढ़कर आँखें भर आती है। स्वयं यह साहित्य ऐसे कारुणिक दृश्यों के साथ सजल नेत्रों से भरा जीवंत व्यक्ति प्रतीत होता है।

अब पथरीला सोना के इस अंश को ही ले ले, जो हमें हमारे अतीत में तो ले ही जाती है, मजदूरों की जीवन शैली और सामाजिक रहन-सहन को प्रस्तुत करती हैं।

'सुरेखा का भात'

कहानी मर्म को स्पर्श करें तो मार्मिक बन जाती है, और आँखों के सामने नाच जाय, तो जीवंत हो उठती है, जीवंत का अर्थ यह हुआ कि पूरी घटना पढ़ी नहीं जा रही हो बल्कि लगे की आँखों के आगे भी हो रही हो ।

पथरीला सोना के चतुर्थ खंड में सुरेखा का भात थोड़ी लापरवाही से गीला हो सकता था, और उसको इसके लिए सजग रहना भी होगा।

चैतन्यता भंग होने की आशंका तो बनी ही रहती है पर उसे चैतन्य रहना होगा क्यों कि भात पसाने में देरी ना हो जाय, तो भात गीला हो सकता है इसका भी खास

ख्याल वह रख रही थी। बीच-बीच में डेकची से चावल के दाने को उठा कर मीस कर देख लेती कि भात पसाने का वक्त हो गया.. अब 'भात पसाने" और चावल के दाने को मीस कर ये दोनों शब्द जब कहानी में जब समाते हैं, तो उस मजदूर की जीवन शैली, परवरिस और रहन-सहन का दृश्य चित्रित होता है जहाँ कहानी गाँव के मिट्टी के चूल्हे से शुरू होती है।

ऐसे अनेकानेक वृतांतों से भरे पड़े 'पथरीला सोना' की कथावस्तु मजदूरों और उनके बच्चों के जीवन से जुड़े अमिट दस्तावेज के रूप में भारतीय मजदूरों एवं उनके बच्चों के चरित्र का यथार्थ चित्रण करते है।

रामदरस अपनी पत्नी सती के साथ भारत से मॉरीशस के लिए चले थे उन्हें संतान नहीं थी। संतान न होने का यह दुख तो उन्हें अवश्य कचोटता था, लेकिन भर समुद्र दुख देखने की प्रक्रिया में पति पत्नी ने कलेजे पर पत्थर रख कर मान लिया था बाँझ रह जाना ज्यादा ठीक है। यहाँ अपने जैसे भारतीयों को बच्चों के लिए दुख उठाते देखा। बच्चे माँ के सामने मरते थे, किन्तु माँ-बाप कुछ नहीं कर पाते थे | अपने जहाजिया भाई मुंशी ने तो मारीच देश पहुँचते ही दस बरस के अपने बेटे को खो दिया था | यह था यहाँ माँ - बाप होने का दुख !

ऐसा भी यहाँ हुआ कि गोरों कि -"जोर जबरदस्ती के परिणाम में औरतों की गोद में बच्चा - आ गया। बालक के रंग से पता चला उस के शरीर में तो गोरे की छाप है। इस कारण घर में झगड़े पैदा होते थे। गृहस्थी टूटने की नौबत आती थी। पति घर से भागा और पत्नी ने दुख से टूट कर पागलपन की स्थिति में बच्चे की हत्या तक कर डाली।" 16 रामदरस अपनी पत्नी सती के साथ यह सब देखते चल रहे थे कि सती ने अपने गर्भ के पुत्र से उन्हें अवगत किया था। जिस रोज़ रामदरस के घर पुत्र पैदा हुआ था उसी दिन रमण महतों की बहू ने आत्म हत्या कर ली थी। आत्म हत्या का कारण गोरों का शोषण हो, गरीबी हो, घर का कलह हो, लेकिन इन बातों से ऊपर जाने वाली एक औरत हुई जो दिनों बरसों जी कर अपने बच्चों का एक संसार छोड़ कर जा सकती थी।

घर में सती अपने नवजात बेटे की किलकारी में डूबी होगी। धाई मंगोरी सब संभाल लेती रामदरस तो बस अपने मित्र रमण के साथ बैठे उनके दुख में डूबे रह गए थे। आज रामदरस क वही पुत्र उन्नीस साल का जवान हो गया नाम है कँवल यह तो एक कोण से ठीक था कि अपने घर बेटी नहीं हुई , किन्तु रामदास के लिए यह गर्व की बात न थी |

जो बच्चे पढ़ते थे उनको भी कई समस्या का सामना करना पड़ता था।देशराज जहाँ पढ़ता था उस कॉलेज को छोड़ देने का निर्णय लिया था। पिता के पूछने पर बताता है कि यह कॉलेज छूट जाने से सभी परेशानियों से छुटकारा मिल सकता है।वे जब दूसरे कॉलेज के लिए दौड़-धूप में लगे तो उनसे कहा गया कि अपने पूर्व कॉलेज से प्रमाण ले आओ। देशराज ने प्रिंसिपल से जब कागज पाने का अनुरोध किया था तो यह उनके अपने जीवन का महाकाल बन गया था।-" प्रिंसिपल ने उन्हें अंग्रेज़ राज को गाली देने वाला अपराधी बनाकर कॉलेज से निकलवाने के साथ उनके माथे पर पाँच महीने के लिए जेल की सजा लिखवा दी थी।" 17 देशराज सजा काटकर लौटे तो शोकातुर पिता का देहांत हो चुका था। प्रिंसिपल ने उन्हें कॉलेज का सबसे बड़ा बागी होने के लांछन में जकड़ लिया था और सरकार ने उनकी दुकान में ताला लगा दिया था।

रोजगार की समस्याएँ :-

रामदेवधुरंधर बताते हैं कि भारतीय मजदूरों का पहला जत्था ई.1834 में मॉरीशस लाया गया था। उनके पिता का जन्म ई.1897 था। प्रथम भारतीयों का मॉरीशस आगमन और उनके पिता के जन्म के बीच लगभग छह दशक का अंतर है। तब भी भारत से लोगों को इस देश में लाया जाना जारी था। इस दृष्टि से लेखक के पिता उनके लिए इतिहास के सबल साक्षी थे। भारतीयों को लाकर गोरों की ज़मींदारी के झोंपड़ीनुमा घरों में बसाया जाता था। तब भारतीयों के दो वर्ग हो जाते थे। एक वर्ग के लोग वे होते थे जिन्हें जहाज़ से उतरने पर गोरों की ओर से बनाये गये झोंपड़ीनुमा घरों में रखा जाता था। वे गोरों के बंधुआ जैसे मज़दूर होते थे। दूसरे वर्ग के लोग वे हुए जो भारत से सब के साथ जहाज़ में आते थे, लेकिन काट-छाँट जैसी नीति में पगे होने से वे गोरों के खेमे में चले जाते थे। वे सरदार और पहरेदार बन कर अपने ही लोगों पर कोड़े बरसाते थे।

विस्थापन का दर्द तो उन अतीत जीवियों का हुआ जो इस के भुक्तभोगी थे। मैं उन लोगों के विस्थापन वाले इतिहास से बहुत दूर पड़ जाता हूँ परंतु मैं पीढ़ियों की इस दूरी का खंडन भी कर रहा हूँ। उन लोगों का विस्थापन लेखक के अंतस में अपनी तरह से एक कोना जमाये बैठा होता है और रामदेवधुरंधर उसे बड़े प्यार से संजोये रखता है । इसी बात पर उनका मनोबल यह बनता है लेखक भारतीयों के विस्थापन को मानसिक स्तर पर जीता आया है। यहीं नहीं, बल्कि लेखक की दृष्टि में तो अपने छुटपन में वे

अपने छोटे पाँवों से इतिहास की गलियों में बहुत दूर तक चला भी था। रामदेव धुरंधर अपने पिता से सुनी आपबीती से संस्कारित हुए। किन्तु भारतीयों का दर्द उनकी धमनियों में अधिक गहरे ढंग से उतरा है। लेखक ने उसके दु:ख -दर्द , आँसू , शोषण , गरीबी का वर्णन किया है |

ये सभी मजदूर अनपढ़ थे तो उनको रोजगारी प्राप्त करने में समस्या खड़ी होती थी | दु:खों से विस्थापित भारतीयों की त्रासदी ऐसी भी रही थी कि पर्वत के पार भागते वक्त उनके पीछे कुत्ते दौड़ाये जाते थे। कुआँ खोदने के लिए भेजे जाने पर ऊपर से पत्थर लुढ़काकर यहाँ जान तक ली गई है। बच्चे खेल रहे हो और कोई गोरा अपनी घोड़ा बग्गी में जा रहा हो तो आफ़त खड़ी हो जाती थी।यह न पूछा जाता था कि स्कूल कयों नहीं जाता। कहा जाता था कि बड़े हो गए हो तो खेतों में नौकरी करने क्यों नहीं आते हो। इस प्रकार नौकरी की भी समस्या थी वे खेती को ही नौकरी मानते थे।

'उजाला 'नामक अखबार में खुशाल की तस्वीर छपी थी।तस्वीर के नीचे छपा था - "यह आदमी लोगों पर अपना षड्यंत्र चलाकर उन्हें दूसरे देश ले जाता है।" 18 काशी ने जैसे ही खुशाल को देखा था कुछ जानना तो होगा। खुशाल का पीछा करते वे कलकत्ता के बंदरगाह पर पहुँच गए थे।यहाँ खुशाल के साथी उसका इंतजार कर रहे थे। बहुत से लोगों को यहाँ इकट्ठा कर रखा गया था।इनमें अधिकतर बिहारी थे | काशी में पढ़े-लिखे थे उन्हें पता लगाने पर जानकारी मिली थी कि इन लोगों को मॉरीशस के लिए ले जाया जा रहा था है। बिहारियों को इसलिए ले जाया जा रहा है कि वे ईख की खेती का मर्म जानते हैं। मॉरीशस में इन्हें ईख के खेतों से ही जुड़ना पड़ा है। इस प्रकार यहाँ पर भी लेखक ने बेरोजगारी की समस्या की तरफ संकेत किया है।

शक्कर के कारखाने में भी लोगों की संख्या बढ़ जाती है वहाँ से भी किसी -न बहाने लोगों को निकाल दिया जाता है। उपन्यास में इसका वर्णन दृष्टिगोचर होता है-" आज कारखाने की अपनी नौकरी पर जाते वक्त उन्हें अपने वक्ष पर ठंडक महसूस हुई। यक्ष को हाथ से छूने पर वे दहल गए। घाव से पीब रिस आई थी। देशराज लोगों के बीच से चले जा रहे थे। उम्र में छोटे लोग उन्हें नमस्कार कर रहे थे और वे बड़ों को नमस्कार कहने में खोए हुए थे। पीब ने उन्हें इतना परेशान किया कि धीरे धीरे लोगों के बीच से हटते गए और जंगल - की ओर मुड़ गए। उन्हें अपने दुर्भाग्य पर रोने के लिए कहीं बैठ जाना था, लेकिन इधर से लोग खेतों की ओर जाते थे। देशराज को और दूर निकल

जाने के लिए अपने भीतर हौसला पैदा करना पड़ा। पर दूर भाग कर उन्होंने अपने को अपने आप में ही तो पाया। उन्होंने समझ लिया कि इस पलायन का कोई औचित्य नहीं है। घाव अभी दुर्गंध से मुक्त थी तो देशराज अपने आप से यही तो कहते भगवान माथे पर अभिशाप धीरे धीरे लिख रहा था। उन्होंने अपनी नौकरी पर जाने का साहस किया। कंठ में ज़हर डाल कर मरा तो जा सकता था, लेकिन जो भगवान होगा कहा कि मेरा अभिशाप पूरा होने में तो अभी समय लगेगा इसलिए आवश्यक है कि जी कर दिखाओ। देशराज भगवान के इस हठ के लिए जीने से अधिक अपने लोगों के लिए जीने का एक आंतरिक मोह अपने भीतर पालने में लगे हुए थे। सारे मोह चाहे छूट जाएँ, लेकिन एक यह मोह न छूटे।"19 भारतीय मजदूरों को नौकरी की जगह मजदूरी करने के लिए विवश किया जाता है। इसी कारण भी बेरोजगारी बढ़ती जाती है। देशराज ने अपने भाइयों के कहने पर आजीविका के लिए कहीं और वैध की दुकान खोली थी और अपनी अधूरी पढ़ाई में नये सिरे से सक्रिय होना चाहा था। भाइयों ने पिता जैसे स्नेह की छाँव देकर उनका हौंसला बढ़ाया था। पर राक्षस तो उनकी ताक में बैठा था। इस दुकान में भी ताला लगा था और प्रिंसिपल अपने उन दोनों मित्रों को लेकर उन्हें गाली देने आ धमका था। देशराज को कहना पड़ा था -"अपनी मौत को दावत दे रहे हो ! " 20

राजनीतिक समस्याएँ :-

'बनते बिगड़ते रिश्ते ' उपन्यास में राजनीति के द्वारा रचे जानेवाले जाति-पाँति के भेदभाव का चित्रण , मॉरीशस की स्वतंत्रता के बाद भी मजदूरों के अभावग्रस्त जीवन की समस्याओं का यथार्थ निरूपण किया गया है | इस उपन्यास में सुधा एक सुखी-सम्पन परिवार की लड़की है। जहाँ सभी तरह की सुख-सुविधा है ,सुधा के पिता जयकिसुन धनवान और एक कुशल राजनेता है । जिसके कारण समाज में उनको मान-सम्मान प्राप्त है | राजनेता की पुत्री सुधा के बारे में लोग तरह-तरह की बातें करते थे -" पूरन तो साक्षात परी ही लाया है। छुपा रुस्तम निकला हमारा पूरन।" 21

पुर्तगाली और उच्च के अधिकार से हो कर मॉरीशस १८१० तक फ्रांसीसियों की ओर से शासित हुआ था। अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच युद्ध होने से मॉरीशस अंग्रेजों के अधीन हुआ। बहुत से फ्रांसीसी अपने मातृ देश फ्रांस लौट गए। जिन फ्रांसीसियों ने जाने के लिए तत्परता नहीं दिखाई अंग्रेजों ने उन्हें देश से निष्कासित नहीं किया। हिन्द महासागर में स्थित मॉरीशस का सामरिक महत्व था। इसी लक्ष्य से अंग्रेज़ों

ने इस देश पर जय की थी। फिर ऐसा हुआ कि अंग्रेज युद्ध के गणित से मॉरीशस को ऑकते रहे और देश की ज़मीन पर फ्रांसीसियों का स्वामित्व बरकरार रहा। भारतीय मजदूरों को ईख के खेत उगाने के लिए लाने की यहीं मंत्रणा हुई। भारतीय तो अंग्रेज़ों की अधीनता में आए, लेकिन इन के लिए दो सरकारें हुईं। अंग्रेजों ने अपने झंडे से भारतीयों को मापा और फ्रांसीसी देश की अंदरूनी ज़मीन में इन के मालिक बने। फ़्रांसीसी ईख के खेतों से जुड़े हुए इन लोगों के लिए यातना शिविर चलाते थे। फ्रांसीसियों की क्रूर दास्ताँ यह है कि विश्व स्तर पर दास प्रथा का उन्मूलन हो जाने के बावजूद वे लोगों में दास की छवि देखने का शौक पालते थे। यहाँ भारतीयता का नाम लेने या अपने हक की बात करने से अंग्रेज़ सरकार के बंदी हो जाएँ तो कारागार में पावों में बेड़ी तो पड़ती ही थी। देश की अन्दरूनी ज़मीन में क्रूरता इससे भी आगे जाती थी। ये लोग गरीबों के पैरों में बेड़ी डालते थे और मज़दूरों से गाड़ी खिंचवाने में अपने लिए जश्न मानते थे। दुख देने वाले यहाँ वे भी हुए जो एक ही जहाज़ में 'जहजिया भाई' बन कर आए और काट छाँट जैसी मानसिकता में पगे होने - से गोरों के खेमे में चले गए। इन के भी दिये हुए दुख इतने अमानवीय रहे हैं कि गोरों की रची हुई क्रूरता का इसे दूसरा पक्ष कहा जा सकता है।

१८६४ में यहीं बसे हुए जर्मन आदौल्फ़ दे प्लेवित्स की एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी। रिपोर्ट में आया था - शक्कर प्रतिष्ठानों में भारतीय मूल के लोगों की जानें ली जाती हैं। बहू बेटियों पर कहर टूटते हैं। भीषण मज़दूरी के बदले मज़दूरों के थैले में गोदाम से सड़ा अन्न डाल कर उन्हें घर लौटाया जाता है। बहुत से इलाकों में दूकानें न होने से लोगों को मीलों दूर खरीदारी के लिए जाना पड़ता है। परंतु सवाल पैसे का भी तो होता है। पैसा हो तब तो ये लोग व्यवस्थित रूप से खरीदारी कर पाएँ !

भारतीयों के आने के तीन दशक बाद प्लेविल्स की ओर से यह सवाल सामने आया था। ऐसे में सोचनीय क्यों न हो, उन पूर्व तीन दशकों में उन लोगों पर क्या बीता होगा ! प्लेविल्स की यह रिपोर्ट पूरी दुनिया में पहुँची थी। -"यह आप्रवासी भारतीयों के हक में कलम की ताकत थी। यहीं अंग्रेज़ सरकार की कुंभकरणी नींद टूटी थीं। पर अन्दरूनी बात यह थी कि अंग्रेज़ सरकार का सब जाना हुआ था। बात वही कि मैं अपना झंडा देखता हूँ और तुम देश की अनछुई जमीन को भारतीयों की मेहनत के बल पर ईख की हरियाली से मढ़ दो। अंग्रेज़ों को 'कर' वसूल करने से मतलब था जो उन्हें विपुल मात्रा में मिल जाता था । " 22

जेल में अधिकारियों ने कँवल को यह कहकर आश्वस्त किया कि उसे कुछ हो तो उसकी रक्षा के लिए अंग्रेज सरकार उसके साथ है।किन्तु कँवल को इस वक्त ऐसे आश्वासन की भूख नहीं थी | उसे केवल यह देखना था कि ये लोग करना क्या चाहते है | उसे यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि चलकर कैदखाना बताए। वह चलने के लिए राजी हो गया | कैदखाने के पास पहुँचने पर उससे कहा गया कि अब तुम जाओ और अपने घर के पास से आकाश में उठता हुआ धुँआ देखो। एक अधिकारीने कहा कि अब यह कैदखाना जलनेवाला है। अधिकारी ने यह भी कहा कि-" अपने लोगों को खुशी का यह समाचार जरूर सुनाना"23 इस तरह की राजनीति ये अंग्रेज अधिकारी करते थे |

'ढलते सूरज की रोशनी ' उपन्यास में राजनीति का वर्णन इस तरह है - कर्णिका बिहार की रहनेवाली थी।उसका सही नाम मोना कुमार था। उसने बिहार में एक भोजपुरी फिल्म में अभिनेत्री की हैसियत से काम किया था।फ़िल्म का नाम 'पूर्णा ' था। फ़िल्म में मोना कुमार का यही नाम था। फिल्म खूब चली थी। फिल्म में पूर्णा गरीब घर की बेटी थी। वह पढ़-लिखकर अपना नाम रोशन करती है। वह उच्चता प्राप्त करती जाती है, लेकिन वह गरीबी को नहीं भूलती। वह अपने गाँव के गरीब बच्चों को पढ़ाती है, पर एक राजनेता की उस पर बुरी दृष्टि पड़ती है। वह पूर्णा पर बलात्कार बरसाने की कोशिश करता है। पूर्णा के हाथों उसकी हत्या हो जाती है। उस राजनेता के परिवार की ओर से वातावरण ऐसा बन आता है कि लगता है पूर्णा को फांसी या आजीवन कारावास हो सकता है, पर पूर्णा अदालत से निर्दोष प्रमाणित होकर बाहर निकलती है। वहाँ के लोगों के आक्रोश और मज़बूत गवाही का यह ज्वलंत प्रमाण था।

उसने मुम्बई आने पर अपना नाम 'कर्णिका' रख लिया था। उसके साथ 'पूर्णा' फिल्म की प्रसिद्धि जुड़ी हुई थी, इसीलिए उसे यहाँ फिल्म प्राप्त होने में कोई कठिनाई नहीं हुई। उसे दो फिल्में मिलीं, लेकिन दोनों बुरी तरह पिट गयीं। यह उसकी असफलता का मानो कीर्तिमान बनकर यहाँ फिल्म जगत में छा गया। इधर काफी वक्त बीता, लेकिन उसे एक भी फिल्म नहीं मिली, पर उसे यहां जीना तो है। बस सब कुछ पैसे पर आकर अटक जाने से वह गुमराह हो गई है।

यह प्रबोध के जीवन के कुछ साल पहले की बात थी। वह मॉरीशस के शिक्षा मंत्री के नाते मुम्बई में शिक्षा पर आधारित एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लेने गया था।

कर्णिका 'उन्नीस साल की थी। प्रबोध को खेदन से कर्णिका की उम्र मालूम होने पर वह दंग रह गया था। कर्णिका तो आनी की बेटी शामिला से भी कम उम्र की थी। इतनी छोटी सी उम्र में कर्णिका का बिहार में वैसा उत्थान और अब मुम्बई में ऐसा पतन ! पर प्रबोध उसके उत्थान अथवा पतन से अपना कोई सरोकार बनाता नहीं, बल्कि इसके विपरीत कर्णिका शरीर के सौदे से अपना जीवनयापन करती थी तो प्रबोध उसके प्रति आसक्ति के लिए मानो अपने अंतस में कोई खाता खोल लेता। सात-आठ दिनों बाद वह मुम्बई से अपने मॉरीशस लौट जाता। मुम्बई की जमीन से नारी लोलुपता की कोई पहचान उसके साथ में जाने वाली नहीं थी।

"प्रबोध मॉरीशस के अपने जीवन के लिए इतनी सुन्दर कल्पना गढ़ने के बीच कर्णिका के लिए वासना का जो उन्माद तराश रहा था, इसकी कोई ध्वनि, रूप या संकेत न होने से अभी वह न जान पाता, उसके जीवन में कैसा भूचाल आ सकता है। कर्णिका 'एड्स' से उत्पीड़ित थी !" 24

राजनीति में अंग्रेज़ सरकार से मॉरिशस की स्वतंत्रता की माँग। उन्हीं दिनों मॉरिशस में क्रिश्चियनों और मुसलमानों के बीच कत्लेआम का कहर। अमानवीयता के उस दौर में जिसे जहाँ जो आदमी मिलता है उसे काट कर फेंक देता है। इंग्लैंड से फ़ौज़ बुला कर इस नृशंसता को शांत करने की कोशिश की जाती है। एक सिनेमा भवन में औरतबाज़ी के कारण देशव्यापी कत्लेआम की नौबत आई थी जिसे राजनीति का रंग देने वाले तमाम हुए।

भारतीय खून के लोग स्वतंत्रता के पक्षधर हुए थे और फ्रांसीसी मूल तथा अफ्रीकी नस्ल के लोगों ने स्वतंत्रता का विरोध किया था। पर विरोध चल न पाया। आम चुनाव होने पर १८ मार्च १९६८ को देश की साँस पाया और अपना झंडा आकाश में फहरते देखने का अवसर पा सका । परंतु स्वतंत्रता का वह वांछित अक्स बन न पा रहा था। जिस के कल्पना लोक में विशेष कर भारतीय मन के लोगों को ले जाया गया था। विडंबना ही हुई थी कि भारतीय खून के ही ऐसे राजनेता हुए जिन्होंने स्वतंत्रता का लाभ स्वयं उठाना चाहा। ऐसे में हुआ यह कि भारतीय मन के जिन लोगों के वोटों से जीत का सेहरा उन के सिर पर बंधा था वे पलट कर उन्हीं लोगों का जीना दुरुह करने लगे थे।

पंचम खंड में दिवाकर रूस से डाक्टर बन कर स्वदेश लौटता है और उसे पता चलता है पोर्ट लुईस रहने वाली शहनाज़ ने अपने माँ बाप से कहा था-" उस का

इन्तकाल हो तो उस के लिए कब्रस्तान अपने जन्म गाँव में हो। उस के अनुरूप उस के पिता ने ऐसा किया था। यह दह गाँव था जहाँ दिवाकर अब भी रहता था। " 25

पंचम खंड में एक माँ है जो अपने सगे बेटे के साथ भोग के लिए तत्पर हो जाती है। यह अंश इस खंड की आत्मा का एक बड़ा ही दारुण पक्ष बन गया है।

पंचम खंड में उन दिनों की और भी तमाम घटनाओं दुर्घटनाओं का विषद् वर्णन । पर उसे वहीं न देख कर मॉरीशस के वर्तमान में भी देखा जा सकता है। इस प्रकार मॉरीशस की राजनीति का लेखक ने अपने उपन्यासों में चित्रण किया है |

मॉरीशस की राजनीति के भी रंग बदलते रहे। आम चुनाव होने पर वर्तमान सरकार ने ही पुनः जीत प्राप्त की संसारी तिलचट नाम से जो आदमी भारत में मॉरीशस का राजदूत हुआ करता था चुनाव से पहले उसे आम चुनाव में भाग लेने के लिए मॉरीशस बुला दिया गया था।

निष्कर्ष :-

रामदेव धुरंधर जी का प्रसिद्ध महाकाव्यात्मक उपन्यास है। 'पथरीला सोना' जो छ: खण्डों में प्रकाशित है, इसमें उन्होंने भारत से मजदूरों के रूप में ले जाए गए बिहार और उत्तर प्रदेश के उन किसान मजदूरों के संघर्षमय जीवन का उनके उत्पीड़न व यातनाओं का चित्रण किया है। जिन्हें अंग्रेजों द्वारा बरगला कर मॉरीशस ले जाकर वहाँ बँधुआ मजदूरों का जीवन जीने पर मजबूर किया गया।

गरीबी व बदहाली का जीवन जीने वाले इन किसानों व मजदूरों को यह कह कर बहलाया जाता था कि 'मरीच देश' में पत्थरों के नीचे सोना प्राप्त होता है, तो जो अपने जीवन को सुधारना चाहे वह वहाँ जहाज द्वारा जा सकता है। इसके केन्द्र में पहली बार 1834 में मॉरीशस में आम भारतीय मजदूरों से लेकर 2009 तक मॉरीशस में बसे प्रवासी भारतीयों का जीवन, उनके दु:ख-दर्द व संघर्षों की कथा प्राप्त होती है। 1834 में भारतीय मूल के लोग मॉरीशस ले जाए गए, उन्हें वहाँ दोहरे मालिकों की यातनाओं का शिकार होना पड़ा, अंग्रेजों ने जहाँ भारतीयों की समुद्री सीमा का निर्धारण किया वहीं फ्रांसीसी देश के अंदरूनी भाग में उनके मालिक बने। देश के भीतर तो थे फ्रांसीसी भारतीय मजदूरों के लिए मानो यातना शिविर चलाने थे।

इन यातना शिविरों को चलाने वाले फ्रांसीसी अत्यंत क्रूर व हठी होते थे कि विश्व स्तर पर दास प्रथा का उन्मूलन हो जाने पर भी ये मजदूरों को अपना गुलाम बना कर रखते थे। यदि कोई उनकी क्रूरता का विरोध करता तो उसे कारागार में डालकर बंदी बना दिया जाता, पाँवों में बेड़ियाँ डाल दी जाती। मजदूरों को पशुओं समान समझ उनसे गाड़ियाँ भी खिंचवाई जाती थीं। गोरों व फ्रांसीसियों द्वारा किए गए अन्याय ,अत्याचारों का अंकन लेखक ने 'पथरीला सोना ' के हरेक खंड में किया है ।

मैंने इस अध्याय में भारतीय मजदूरों की , गिरमिटियायों की , स्त्रियों की , बच्चों की , वृद्धों की , रोजगारी की , राजनीति की इत्यादि कई समस्याओं का विश्लेषण किया है |

संदर्भ-सूची :-

1. पथरीला सोना -प्रथम खंड .रामदेवधुरंधर .पृ-16

2. वही .पृ.17

3. वही -पृ.18

4. रामदेवधुरंधर की रचनाधर्मिता .डॉ. अम्बरीश-पृ.65

5. पथरीला सोना .रामदेवधुरंधर -खंड 2 -पृ.73-74

6. पथरीला सोना .खंड 1 .रामदेवधुरंधर -पृ.22

7. वही -पृ.30

8. वही

9. वही

10. ढलते सूरज की रोशनी .रामदेवधुरंधर -पृ.29

11. वही .पृ.76

12. पथरीला सोना -रामदेव धुरंधर .खंड 1.पृ-15

13. वही .पृ.19-20

14. वही

15. वही-पृ.20

16. वही .पृ-32

17. वही.पृ-288

18. वही .पृ-65

19. वही.पृ-284

20. वही .पृ-289 -290

21. बनते बिगड़ते रिश्ते -पृ.10

22. पथरीला सोना .खंड 1. रामदेवधुरंधर .पुरोवाक से

23. वही-पृ.313

24. ढलते सूरज की रोशनी .रामदेवधुरंधर -पृ -9

25. पथरीला सोना -चतुर्थ खंड -रामदेवधुरंधर .पृ-441